प्रतिदर्श प्रश्नपत्र, 2022-23

विषय-हिंदी, कोर्स-ए (कोड-002)

Sample Paper - 7

निर्धारित समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

(1) इस प्रश्नपत्र में दो खंड हैं- खंड 'क' और ख'। खंड-क में वस्तुपरक/बहविकल्पी और खंड-ख में वस्तुनिष्ठ/वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं।

(2) प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या 17 है और सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(3) यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार लिखिए।

(4) खंड 'क' में कुल 10 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 49 है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए 40 उपप्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(5) खंड 'ख' में कुल 7 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार विकल्प का ध्यान रखते हुए सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड - अ (बहुविकल्पी / वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

जब एक साथ मिल कर खेलते हैं,
एक-दूसरे के दुःख-सुख झेलते हैं;
कभी रूठते हैं, मनाते हैं,
और फिर गले लगकर मुस्कुराते हैं।
जब हम बतियाते हैं-एक हो जाते हैं
भाषा-भूषा हमें पास लाते हैं;
पर बिना शब्दों के भी जोड़ते हैं संगीत के स्वर
जिससे होंठ गुनगुनाते हैं, पाँव थिरक जाते हैं।
हम तब भी एक होते हैं,
जब प्रकृति की गोद में होते हैं।
दीन-दुनिया से परे, चैन की नींद सोते हैं,
और सुनहरे सपनों की दुनिया सँजोते हैं।
हम तब भी एक होते हैं,
जब भय से सहम जाते हैं।
अपने मन के दरवाज़े बंद भी कर लें,
पर स्वयं को दूसरे से जुड़ा पाते हैं।
एक होने का यह भाव बड़ा अजीब है,
इसी भाव में यीशु का यश, अल्लाह का ताबीज़ है।
गुरु की वाणी है, रामनाम का बीज है,
यह परंपरा और संस्कृति की चीज़ है।
जब एक साथ मिल कर खेलते हैं,
एक-दूसरे के दु:ख-सुख झेलते हैं;

(i) काव्यांश में स्पष्ट किया गया है -

i. एक साथ मिलकर खेलने पर सब प्रसन्न हो जाते हैं।
ii. एक - दूसरे का सुख - दुःख झेलने पर सब हर्षित हो जाते हैं।
iii. हँसकर सब एक - दूसरे को गले लगाते हैं।
iv. एक - दूसरे से रूठने पर सब अलग हो जाते हैं।

क) कथन i, ii व iii सही हैं
ख) कथन ii व iii सही हैं
ग) कथन i, ii व iv सही हैं
घ) कथन i व iv सही हैं

(ii) भूषा का अर्थ है

क) शोभा
ख) वेश-भूषा
ग) चारा-भूसा
घ) सजावट

(iii) संगीत के स्वर बजने पर क्या होता है?

क) होंठ गुनगुनाते और पाँव थिरकते हैं
ख) कर्त्तव्य के प्रति सजग होते हैं
ग) मन के दरवाज़े खुलते हैं
घ) हम सब मन से जुड़ जाते हैं

(iv) 'सुनहरे सपनों की दुनिया सँजोते है' - पंक्ति में अलंकार है -

क) यमक
ख) रूपक
ग) अनुप्रास
घ) श्लेष

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए –
कथन (A): विभिन्न धर्म और सम्प्रदायों में बंटा होने पर भी सभी धर्म उसे सुख - दुःख में साथ रहने का सन्देश देते हैं।
कथन (R): एक होने के भाव अजीब हैं क्योंकि हम सभी का मान करते हैं।

क) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है।
ख) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।
घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: [5]

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।
जीवन अस्थिर, अनजाने ही

हो जाता पथ पर मेल कही
सीमित पग-डग, लंबी मंजिल,
तय कर लेना कुछ खेल नहीं।
दाएँ-बाएँ सुख-दुख चलते
सम्मुख चलता पथ का प्रमाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।
साँसों पर अवलंबित काया,
जब चलते-चलते चूर हुई।
दो स्नेह शब्द मिल गए,
मिली नव स्फूर्ति,
थकावट दूर हुई।
पथ के पहचाने छूट गए,
पर साथ-साथ चल रही यादें।
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।
-- शिवमंगल सिंह सुमन

(i) कवि किस-किस राही को धन्यवाद देना चाहता है?

i. जिससे कवि को जीवन पथ पर स्नेह मिला।
ii. जिनके स्नेह से कवि की जीवन यात्रा सरल हो गई।
iii. जिनके स्नेह से कवि को मुसीबतों का सामना करना पड़ा।
iv. जिनके स्नेह से कवि को दबा दिया।

क) कथन i व ii सही हैं
ख) कथन i व iv सही हैं
ग) कथन i, ii व iii सही हैं
घ) कथन i व iii सही हैं

(ii) जाने-पहचाने लोगों का साथ छूट जाने पर भी कवि के साथ अब कौन चल रहा है?

क) सबकी यादें
ख) पुराने लोग
ग) अनजाने लोग
घ) उसके मित्र

(iii) जीवन पथ पर कवि का साथ कौन-कौन दे रहे हैं?

क) सुख
ख) दुःख
ग) आलस्य
घ) सभी विकल्प सही हैं

(iv) कवि राही को धन्यवाद क्यों देना चाहता है?

क) क्योंकि कवि ने उससे ऋण लिया था
ख) क्योंकि वह कवि से स्नेह नहीं करता

ग) क्योंकि उसने कवि को बीच में छोड़ दिया

घ) क्योंकि उसके स्नेह से वह अपनी जीवन यात्रा को पूरा कर सका

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए –
कथन (A): मंजिल तय करना कोई खेल नहीं है।
कथन (R): मंजिल पाने की राह बड़ी लंबी होती है और उस पर चलने वाले कदम बहुत छोटे हैं इसलिए उसे पाना बहुत कठिन होता है।

क) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है।

ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

ग) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

शिक्षा किसी भी समाज की विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है, इसलिए मानव समाज में इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। शिक्षा से तात्पर्य है- शक्ति को ग्रहण कर मनुष्य द्वारा सही अर्थ में अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सीखना, अज्ञान के अंधकार से निकलकर ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ना। शिक्षा द्वारा ही ज्ञान और अज्ञान के मध्य अंतर को समझकर मनुष्य सही दिशा की ओर बढ़ता है तथा सम्यक् ज्ञान के प्रकाश में जीवन का सर्वांगीण विकास कर पाता है, परंतु जब समुचित विकास का मार्ग अवरुद्ध होता प्रतीत होता है, तब ऐसा समझा जाना तर्कपूर्ण है कि प्रचलित शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है।
ऐसी स्थिति में शिक्षा नीति में सुधार करना अनिवार्य हो जाता है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का अनुकरण करने के कारण हम अपनी शिक्षा और संस्कृति को भूल रहे हैं और नैतिकता के पतन की ओर अग्रसर हैं। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह मानी जाती है कि वह नीतियों से परिपूर्ण थी।
नीति अर्थात् सही दिशा-निर्देश, ये मनुष्य के ऊपर उठने का व आगे बढ़ने का सबसे बड़ा माध्यम होते हैं। शिक्षा मनुष्य का सम्यक् उत्थान करती है। नीति भी मूल रूप से शिष्ट आचरण का ही दिशा-निर्देश करती है। इस प्रकार शिक्षा और नीति का मुख्य उद्देश्य एक ही है।

(i) शिक्षा को समाज के विकास की प्रक्रिया का अभिन्न अंग माना जाता है क्योंकि -

i. शिक्षा से व्यक्ति शक्ति को ग्रहण कर सही अर्थ में अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सीखता है
ii. शिक्षा व्यक्ति को अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती है
iii. शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति ज्ञान और अज्ञान के अंतर को समझने में सक्षम होता है
iv. शिक्षा नीति में व्यक्ति सुधार कर पाता है

क) कथन iii व iv सही हैं

ख) कथन ii व iv सही हैं

ग) कथन i व ii सही हैं

घ) कथन i, ii व iii सही हैं

(ii) शिक्षा मनुष्य को किस ओर ले जाती है?

क) ज्ञान से क्षमताओं की ओर

ख) अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर

ग) ज्ञान से अज्ञान की ओर

घ) इनमें से कोई नहीं

(iii) गद्यांश के आधार पर बताइए कि पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने मनुष्य में किसे बढ़ावा दिया है?

क) अनुकरण की आदत को

ख) पतन को

ग) नीतियों को

घ) इनमें से कोई नहीं

(iv) प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की विशेषता क्या है?

क) अज्ञान की ओर ले जाने वाली

ख) इनमें से कोई नहीं

ग) नीतियों से परिपूर्ण

घ) अनुकरणीय

(v) कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए-
कथन (A): समुचित विकास का मार्ग अवरुद्ध होने पर प्रचलित शिक्षा प्रणाली को सुधारना आवश्यक हो जाता है।
कारण (R): प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति नीतियों और सद्गुणों से भरपूर थी।

क) कथन (A) गलत है किन्तु कारण (R) सही है।

ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं।

ग) कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) निम्नलिखित वाक्य का मिश्र वाक्य होगा -
चौकीदार आया। वह आवाज़ लगाकर चला गया।

क) चौकीदार आया तो था परन्तु वह आवाज़ लगाकर चला गया।

ख) चौकीदार आया और आवाज़ लगाकर चला गया।

ग) आवाज़ लगाते ही चौकीदार आ गया।

घ) चौकीदार आकर आवाज़ लगाकर चला गया।

(ii) **वे रिश्ता बनाकर तोड़ते नहीं थे।** मिश्र वाक्य में बदलिए।

क) वे रिश्ता तोड़ते थे इसलिए बनाते नहीं थे।

ख) वे अगर रिश्ता बनाते हैं तो तोड़ते नहीं हैं।

ग) वे रिश्ता बनाते थे और तोड़ते

घ) यदि वे रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते

नहीं थे। नहीं थे।

(iii) **आप खाना खाकर आराम करें** वाक्य को संयुक्त वाक्य में बदलिए।

क) इनमें से कोई नहीं | ख) आपका खाना बहुत जरूरी है

ग) आपका आराम करना बहुत जरूरी है | घ) आप खाना खाएँ और आराम करें

(iv) **आप ऑफिस जाएँगें या पार्क।** वाक्य संबंधित है-

क) मिश्र वाक्य से | ख) प्रश्न वाक्य से प्रश्न

ग) संयुक्त वाक्य से | घ) सरल वाक्य से

(v) **हर तरह के संकटों से घिरा रहने पर भी वह निराश नहीं हुआ।** रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए।

क) समूह वाक्य | ख) मिश्र वाक्य

ग) संयुक्त वाक्य | घ) सरल वाक्य

4. निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) सुभाष पालेकर ने प्राकृतिक खेती की **<u>जानकारी</u>** अपनी पुस्तकों में दी है। रेखांकित पद का परिचय है:

क) संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिग, एकवचन, कर्मकारक, 'दी है' क्रिया से संबंधित। | ख) संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'दी है' क्रिया से संबंधित।

ग) संज्ञा, भाववाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'दी है' क्रिया से संबंधित। | घ) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'दी है' क्रिया से संबंधित।

(ii) **इस संसार में ईमानदारी दुर्लभ है** वाक्य में **ईमानदारी** शब्द का पद परिचय बताइए।

क) भाववाचक संज्ञा | ख) जातिवाचक संज्ञा

ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा | घ) विशेषण

(iii) **<u>कब्रिस्तान की</u>** भूमि को लेकर छोटे-मोटे तनाव होते हैं। एक ऐसे ही अवसर पर मुझे पंचायत में शामिल होना पड़ा। रेखांकित पद का परिचय है-

क) संज्ञा, वस्तुवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, संबंधकारक। | ख) संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, संबंधकारक।

ग) संज्ञा, द्रव्यवाचक, पुल्लिंग, | घ) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिंग,

एकवचन, संबंधकारक। एकवचन, संबंधकारक।

(iv) वाह! आप तो बड़े नेता **बन** गए। वाक्य में रेखांकित पद है-

क) गुणवाचक विशेषण
ख) कर्ता कारक
ग) सकर्मक क्रिया
घ) संज्ञा

(v) **अपनी** पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद आ रही है। रेखांकित पद का परिचय है-

क) विशेषण, सार्वनामिक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'पत्नी' विशेष्य।
ख) सर्वनाम, निजवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, अधिकरण कारक।
ग) विशेषण, रीतिवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'पत्नी' विशेष्य।
घ) सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तमपुरुष, एकवचन, पुल्लिंग, अधिकरण कारक।

5. निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) **मैं यह भाषा नहीं पढ़ सकूँगा।** इस वाक्य को कर्मवाच्य में बदलिए-

क) मैं यह भाषा नहीं पढ़ूँगा
ख) मेरे द्वारा यह भाषा नहीं पढ़ी जा सकती
ग) इस भाषा को मेरे द्वारा पढ़ पाना मुश्किल है
घ) मुझसे यह भाषा नहीं पढ़ी जा सकेगी

(ii) निम्न वाक्यों में कौन-सा कर्तृवाच्य है?

i. माँ ने बचपन में ही घोषित कर दिया था।
ii. माँ के द्वारा बचपन में ही घोषित किया जाता है।
iii. माँ से बचपन में ही घोषित किया गया था।
iv. इनमें से कोई नहीं

क) विकल्प (iv)
ख) विकल्प (iii)
ग) विकल्प (ii)
घ) विकल्प (i)

(iii) कितने कंबल बँटे? प्रस्तुत वाक्य को कर्मवाच्य में बदलिए-

क) कितने कंबल बाँटे गए?
ख) इनमें से कोई नहीं।
ग) कितने कंबल बँटेंगे?
घ) कितने कंबल बाँटे जा सकते?

(iv) कर्तृवाच्य का उदाहरण नहीं है-

क) गोविन्द विद्यालय जाता है
ख) गिरीश द्वारा पत्र लिखा गया

ग) किसान खेत में सोता है

घ) मोहन घर के लिए रवाना हुआ

(v) **मरीज ने आज खाना खाया** वाक्य को कर्मवाच्य में बदलिए-

क) मरीज खाना खाया

ख) मरीज से खाना खाया नहीं गया

ग) मरीज को खाना खिलाया गया

घ) मरीज द्वारा खाना खाया गया

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

आग के आविष्कार में कदाचित् पेट की ज्वाला की प्रेरक एक कारण रही। सुई-धागे के आविष्कार में शायद शीतोष्ण से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा। अब कल्पना कीजिए उस आदमी की जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढँका है, लेकिन जब वह खुले आकाश के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है, तो उसको केवल इसलिए नींद नहीं आती, क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है? पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है। पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता। हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही मिला है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव प्रधान रहा है, किन्तु उसका कुछ हिस्सा हमें मनीषियों से भी मिला है। जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है। रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला मनीषी हमारे आज के ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्ता था।

(i) आग के आविष्कार में प्रेरक कारण क्या रहा?

क) शरीर को ढँकने की प्रवृत्ति

ख) सोने की प्रवृत्ति

ग) जागने की प्रवृत्ति

घ) पेट की ज्वाला

(ii) सुई-धागे के आविष्कार का प्रेरक क्या रहा?

क) शीतोष्ण से बचना और शरीर को ढंकना

ख) खुले आकाश में सोना

ग) आकाश को देखना

घ) पेट की ज्वाला

(iii) **मोती भरा थाल** का अर्थ है-

क) तारों से भरा थाल

ख) मोती से भरा आकाश

ग) मोतियों से भरा थाल

घ) तारों से भरा आकाश

(iv) भोजन और वस्त्र से परिपूर्ण होने पर कैसा मानव निठल्ला नहीं बैठ सकता?

क) अशिक्षित व्यक्ति

ख) सभ्य व्यक्ति

ग) संस्कृत व्यक्ति

घ) शिक्षित व्यक्ति

(v) गद्यांश में प्रथम पुरस्कृता किसे कहा गया है?

क) दिन में जागने वाले व्यक्ति को | ख) रात के तारों को देखकर न सो सकने वाले व्यक्ति को

ग) दिन में सोने वाले व्यक्ति को | घ) रात के तारों को देखकर सोने वाले व्यक्ति को

7. निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **[4]**

(i) **प्रकृति का अनुराग-अंचल हिल रहा है।** पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) उपमा अलंकार | ख) यमक अलंकार

ग) अनुप्रास अलंकार | घ) रूपक अलंकार

(ii) **दिवस का समय, मेघ आसमान से उतर रही है,**
वह संध्या सुंदरी सी, धीरे-धीरे।
पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) उपमा अलंकार | ख) अनुप्रास अलंकार

ग) रूपक अलंकार | घ) यमक अलंकार

(iii) निम्नलिखित पंक्ति में अलंकार बताइए-
मंगन को देखि पट देत बार-बार है।

क) अतिशयोक्ति अलंकार | ख) श्लेष अलंकार

ग) अनुप्रास अलंकार | घ) यमक अलंकार

(iv) निम्नलिखित पंक्ति में अलंकार बताइए-
रहिमन जो गति दीप की, कुल कपूत गति सोय, बारे उजियारे करै, बढ़े अंधेरों होय।

क) रूपक | ख) उपमा

ग) अनुप्रास | घ) श्लेष

(v) फूल हँसे कलियाँ मुसकाई।
उपर्युक्त पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?

क) मानवीकरण | ख) रूपक

ग) उपमा | घ) अतिशयोक्ति

8. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनि उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।
उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।

(i) कवि जिस सुख की कल्पना कर रहा था, वह कैसा है?

क) क्षणिक

ख) दीर्घ

ग) स्मृति

घ) मधुमाया

(ii) कवि के सुखपूर्वक जीवन जीने की कल्पना क्यों समाप्त हो गई?

क) क्योंकि उसका जीव छोटा-सा था

ख) क्योंकि उसकी प्रेयसी की मृत्यु हो गई थी

ग) क्योंकि वह जीवन जीना नहीं चाहता था

घ) क्योंकि उसे सोना था

(iii) कवि ने पद्यांश में किसके सौन्दर्य का वर्णन किया है?

क) मित्रों के

ख) प्रेयसी के

ग) जीवन के

घ) स्वयं के

(iv) कवि के लिए उसकी प्रेयसी की स्मृति क्यों महत्वपूर्ण है?

क) क्योंकि वह अब दूर जा चुकी है

ख) क्योंकि वह उसके जीवन जीने का एकमात्र सहारा है

ग) क्योंकि वह उन्हें बांटना चाहता है

घ) क्योंकि वह उसे भुलाना नहीं चाहता

(v) पद्यांश में **पथिक** शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है?

क) कवि के लिए

ख) कवि के सम्बंधियों के लिए

ग) कवि के मित्रों के लिए

घ) कवि की प्रेयसी के लिए

9. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए- **[2]**

(i) **बालकु बोलि बधौं नहि तोही** से परशुराम का क्या आशय है?

क) दंड का पात्र तो है, किन्तु वध का नहीं।

ख) सामान्यतः अपराधी होते हुए भी बालक को अवध्य माना जाता है।

ग) इनमें से कोई नहीं

घ) परशुराम अपनी मर्यादा का ही पालन कर रहे हैं।

(ii) गोपियों ने योग को निम्नलिखित में से क्या कहा है।

क) व्याधि　　ख) गगरी

ग) चकरी　　घ) लकड़ी

10. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए- **[2]**

(i) काशी किसकी पाठशाला है?

क) संस्कृत की　　ख) संगीत की

ग) नृत्य की　　घ) संस्कृति की

(ii) बालगोबिन भगत का पहनावा कैसा था?

क) लंगोटी एवं कबीरपंथी टोपी　　ख) अचकन

ग) कुर्ता-पाजामा　　घ) वे नंग-धडंग रहते थे

खंड - ख (वर्णनात्मक प्रश्न)

11. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- **[6]**

(i) **हमारैं हरि हारिल की लकरी** को पढ़कर आपको किस जीवन सत्य का बोध होता है? **सूरदास के पद** के संदर्भ में उत्तर दीजिए।

(ii) संगतकार कविता के आधार पर बताइए कि संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?

(iii) परशुराम के क्रोधित होने का मुख्य कारण क्या था?

(iv) शिशु के धूलि-धूसरित शरीर को देखकर कवि नागार्जुन ने क्या कल्पना की?

12. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए- **[6]**

(i) नौबतखाने में इबादत पाठ के आधार पर उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का प्रारंभिक परिचय देते हुए बताइए कि उनमें संगीत के प्रति आसक्ति किनके गायन और संगीत को सुनकर हुई थी?

(ii) **संस्कृति** पाठ के अनुसार लेखक के अनुसार सभ्यता क्या है?

(iii) मन्नू भंडारी की ऐसी कौन सी खुशी थी जो 15 अगस्त, 1947 की खुशी में समाकर रह गई ?

(iv) **संस्कृति** पाठ के अनुसार मानव-संस्कृति में कौन-सी वस्तुएँ स्थायी है और कौन-सी नहीं और ऐसा क्यों?

13. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के **[8]**

उत्तर लगभग 50-60 -शब्दों में लिखिए-

(i) रचनाकार के लिए अनुभूति के अतिरिक्त बाहरी दबाव भी लिखने के कारण बनते हैं। **मैं क्यों लिखता हूँ** पाठ के लेखक पर कौन-कौन से दबाव थे?

(ii) देश के प्राकृतिक स्थानों के सौन्दर्य का आनंद लेते समय अधिकांश सैलानी वहाँ के पर्यावरण को दूषित कर देते हैं। इस नैसर्गिक सौन्दर्य की सुरवाजें आप अपने दायित्व का निर्वाह कैसे करेंगे? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आलोक में उत्तर दीजिए।

(iii) 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर भोलानाथ के बाबू जी के पूजा-पाठ की रीति पर टिप्पणी कीजिये। आप इससे क्या प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

14. **शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 80-100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए। **[6]**

- संबंधों की परंपरा
- वर्तमान समय में आया अंतर
- हमारा कर्तव्य

अथवा

कमरतोड़ महँगाई विषय पर लगभग 80 से 100 शब्दो में अनुच्छेद लिखिए।

अथवा

मेट्रो रेल-महानगरीय जीवन का सुखद सपना विषय पर लगभग 80 से 100 शब्दो में अनुच्छेद लिखिए।

15. बंसल प्रकाशन प्रा० लि० दिल्ली को डी. टी. पी. आपरेटर की आवश्यकता है। इस पद हेतु अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए व्यवस्थापक को स्ववृत सहित आवेदन-पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

छात्रों के लिए अधिक खेल-सामग्री उपलब्ध कराने का अनुरोध करते हुए अपने प्रधानाचार्य महोदय को xyzschool@gmail.com पर एक ईमेल लिखिए।

16. अपने राज्य के परिवहन सचिव को एक पत्र लिखिए, जिसमें आपकी बस्ती तक नया बस मार्ग आरंभ कराने का अनुरोध हो । **[5]**

अथवा

आपके छोटे भाई/बहन ने एक आवासीय विद्यालय में एक मास पूर्व ही प्रवेश लिया है। उसको मित्रों के चुनाव में सावधानी बरतने के लिए समझाते हुए एक पत्र 80-100 शब्दों में लिखिए।

17. पृथ्वी दिवस पर बेहतर भविष्य बनाने हेतु 25-50 शब्दों मे एक विज्ञापन तैयार कीजिये। **[4]**

अथवा

प्रधानाचार्य जी द्वारा छात्रों को हिंदी दिवस की शुभकामना देते हुए 30-40 शब्दों में संदेश लिखिए।

Solution

खंड - अ (बहुविकल्पी / वस्तपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

जब एक साथ मिल कर खेलते हैं,
एक-दूसरे के दु:ख-सुख झेलते हैं;
कभी रूठते हैं, मनाते हैं,
और फिर गले लगकर मुस्कुराते हैं।
जब हम बतियाते हैं-एक हो जाते हैं
भाषा-भूषा हमें पास लाते हैं;
पर बिना शब्दों के भी जोड़ते हैं संगीत के स्वर
जिससे होंठ गुनगुनाते हैं, पाँव थिरक जाते हैं।
हम तब भी एक होते हैं,
जब प्रकृति की गोद में होते हैं।
दीन-दुनिया से परे, चैन की नींद सोते हैं,
और सुनहरे सपनों की दुनिया सँजोते हैं।
हम तब भी एक होते हैं,
जब भय से सहम जाते हैं।
अपने मन के दरवाज़े बंद भी कर लें,
पर स्वयं को दूसरे से जुड़ा पाते हैं।
एक होने का यह भाव बड़ा अजीब है,
इसी भाव में यीशु का यश, अल्लाह का ताबीज़ है।
गुरु की वाणी है, रामनाम का बीज है,
यह परंपरा और संस्कृति की चीज़ है।
जब एक साथ मिल कर खेलते हैं,
एक-दूसरे के दु:ख-सुख झेलते हैं;

(i) **(क)** कथन i, ii व iii सही हैं
व्याख्या: कथन i, ii व iii सही हैं

(ii) **(ख)** वेश-भूषा
व्याख्या: प्रस्तुत काव्यांश में भूषा का अर्थ वेश-भूषा है। जिस प्रकार भाषा मनुष्य को परस्पर जोड़ती है, उसी प्रकार वेश-भूषा मनुष्यों के बीच अपनत्व का संबंध स्थापित करती है।

(iii) **(घ)** हम सब मन से जुड़ जाते हैं
व्याख्या: कवि कहना चाहता है कि संगीत भी हमें जोड़ने का कार्य करता है अर्थात् संगीत के माध्यम से हम एक-दूसरे के मनोंभावों को समझ लेते हैं और हम सब मन से आपस में जुड़ जाते हैं।

(iv) **(क)** यमक
व्याख्या: प्रस्तुत पंक्ति में 'स' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

(v) **(घ)** कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
व्याख्या: कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।
जीवन अस्थिर, अनजाने ही
हो जाता पथ पर मेल कही
सीमित पग-डग, लंबी मंजिल,
तय कर लेना कुछ खेल नहीं।
दाएँ-बाएँ सुख-दुख चलते
सम्मुख चलता पथ का प्रमाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।
साँसों पर अवलंबित काया,
जब चलते-चलते चूर हुई।
दो स्नेह शब्द मिल गए,
मिली नव स्फूर्ति,
थकावट दूर हुई।
पथ के पहचाने छूट गए,
पर साथ-साथ चल रही यादें।
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही को धन्यवाद।
-- शिवमंगल सिंह सुमन

(i) **(क)** कथन i व ii सही हैं
व्याख्या: कथन i व ii सही हैं

(ii) **(क)** सबकी यादें
व्याख्या: सबकी यादें

(iii) **(घ)** सभी विकल्प सही हैं
व्याख्या: सभी विकल्प सही हैं

(iv) **(घ)** क्योंकि उसके स्नेह से वह अपनी जीवन यात्रा को पूरा कर सका
व्याख्या: क्योंकि उसके स्नेह से वह अपनी जीवन यात्रा को पूरा कर सका

(v) **(घ)** कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
व्याख्या: कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

शिक्षा किसी भी समाज की विकास प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है, इसलिए मानव समाज में इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। शिक्षा से तात्पर्य है- शक्ति को ग्रहण कर मनुष्य द्वारा सही अर्थ में अपनी क्षमताओं का उपयोग करना सीखना, अज्ञान के अंधकार से निकलकर ज्ञान के प्रकाश की ओर बढ़ना। शिक्षा द्वारा ही ज्ञान और अज्ञान के मध्य अंतर को समझकर मनुष्य सही दिशा की ओर बढ़ता है तथा सम्यक् ज्ञान के प्रकाश में जीवन का सर्वांगीण विकास कर पाता है, परंतु जब समुचित विकास का मार्ग अवरुद्ध होता प्रतीत होता है, तब ऐसा समझा जाना तर्कपूर्ण है कि प्रचलित शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है।

ऐसी स्थिति में शिक्षा नीति में सुधार करना अनिवार्य हो जाता है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का

अनुकरण करने के कारण हम अपनी शिक्षा और संस्कृति को भूल रहे हैं और नैतिकता के पतन की ओर अग्रसर हैं। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह मानी जाती है कि वह नीतियों से परिपूर्ण थी।
नीति अर्थात् सही दिशा-निर्देश, ये मनुष्य के ऊपर उठने का व आगे बढ़ने का सबसे बड़ा माध्यम होते हैं। शिक्षा मनुष्य का सम्यक् उत्थान करती है। नीति भी मूल रूप से शिष्ट आचरण का ही दिशा-निर्देश करती है। इस प्रकार शिक्षा और नीति का मुख्य उद्देश्य एक ही है।

(i) **(घ)** कथन i, ii व iii सही हैं
व्याख्या: कथन i, ii व iii सही हैं
(ii) **(ख)** अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर
व्याख्या: शिक्षा मनुष्य को अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती है तथा सम्यक् ज्ञान के प्रकाश में जीवन का सर्वांगीण विकास कर पाती है।
(iii) **(क)** अनुकरण की आदत को
व्याख्या: पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने मनुष्य में अनुकरण की आदत को बढ़ावा दिया है, जिसके कारण वह अपनी शिक्षा पद्धति व संस्कृति को दिन-प्रतिदिन भूलते जा रहे हैं।
(iv) **(ग)** नीतियों से परिपूर्ण
व्याख्या: प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह मानी जाती है कि वह नीतियों से परिपूर्ण थी। नीति अर्थात् सही दिशा-निर्देश, ये मनुष्य के ऊपर उठने का व आगे बढ़ने के सबसे बड़े माध्यम होते हैं।
(v) **(ग)** कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
व्याख्या: कथन (A) सही है किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(क)** चौकीदार आया तो था परन्तु वह आवाज़ लगाकर चला गया।
व्याख्या: एक प्रधान और एक आश्रित उपवाक्य होने के कारण यही उपयुक्त वाक्य होगा।
(ii) **(घ)** यदि वे रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे।
व्याख्या: यदि वे रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे।
(iii) **(घ)** आप खाना खाएँ और आराम करें
व्याख्या: आप खाना खाएँ और आराम करें
(iv) **(ग)** संयुक्त वाक्य से
व्याख्या: संयुक्त वाक्य से
(v) **(घ)** सरल वाक्य
व्याख्या: सरल वाक्य

4. निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(ग)** संज्ञा, भाववाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'दी है' क्रिया से संबंधित।
व्याख्या: संज्ञा, भाववाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्मकारक, 'दी है' क्रिया से संबंधित।
(ii) **(क)** भाववाचक संज्ञा
व्याख्या: जिस शब्द से किसी भाव, दशा, धर्म का बोध हो तो वहां भाववाचक संज्ञा होती है।

(iii) **(ख)** संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, संबंधकारक।
व्याख्या: संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, संबंधकारक।
(iv) **(ग)** सकर्मक क्रिया
व्याख्या: सकर्मक क्रिया
(v) **(क)** विशेषण, सार्वनामिक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'पत्नी' विशेष्य।
व्याख्या: विशेषण, सार्वनामिक, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'पत्नी' विशेष्य।

5. निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(घ)** मुझसे यह भाषा नहीं पढ़ी जा सकेगी
व्याख्या: मुझसे यह भाषा नहीं पढ़ी जा सकेगी
(ii) **(घ)** विकल्प (i)
व्याख्या: माँ ने बचपन में ही घोषित कर दिया था।
(iii) **(क)** कितने कंबल बाँटे गए?
व्याख्या: कितने कंबल बाँटे गए?
(iv) **(ख)** गिरीश द्वारा पत्र लिखा गया
व्याख्या: गिरीश द्वारा पत्र लिखा गया
(v) **(घ)** मरीज द्वारा खाना खाया गया
व्याख्या: मरीज द्वारा खाना खाया गया

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
आग के आविष्कार में कदाचित् पेट की ज्वाला की प्रेरक एक कारण रही। सुई-धागे के आविष्कार में शायद शीतोष्ण से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा। अब कल्पना कीजिए उस आदमी की जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढँका है, लेकिन जब वह खुले आकाश के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है, तो उसको केवल इसलिए नींद नहीं आती, क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है? पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है। पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता। हमारी सभ्यता का एक बड़ा अंश हमें ऐसे संस्कृत आदमियों से ही मिला है, जिनकी चेतना पर स्थूल भौतिक कारणों का प्रभाव प्रधान रहा है, किन्तु उसका कुछ हिस्सा हमें मनीषियों से भी मिला है। जिन्होंने तथ्य-विशेष को किसी भौतिक प्रेरणा के वशीभूत होकर नहीं, बल्कि उनके अपने अंदर की सहज संस्कृति के ही कारण प्राप्त किया है। रात के तारों को देखकर न सो सकने वाला मनीषी हमारे आज के ज्ञान का ऐसा ही प्रथम पुरस्कर्ता था।

(i) **(घ)** पेट की ज्वाला
व्याख्या: पेट की ज्वाला
(ii) **(क)** शीतोष्ण से बचना और शरीर को ढंकना
व्याख्या: शीतोष्ण से बचना और शरीर को ढंकना
(iii) **(घ)** तारों से भरा आकाश
व्याख्या: तारों से भरा आकाश
(iv) **(ग)** संस्कृत व्यक्ति
व्याख्या: संस्कृत व्यक्ति

(v) **(ख)** रात के तारों को देखकर न सो सकने वाले व्यक्ति को
व्याख्या: रात के तारों को देखकर न सो सकने वाले व्यक्ति को

7. निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच बहुविकल्पी प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(i) **(घ)** रूपक अलंकार
व्याख्या: रूपक अलंकार
(ii) **(क)** उपमा अलंकार
व्याख्या: उपमा अलंकार
(iii) **(ख)** श्लेष अलंकार
व्याख्या: श्लेष अलंकार
(iv) **(घ)** श्लेष
व्याख्या: श्लेष
(v) **(क)** मानवीकरण
व्याख्या: मानवीकरण अलंकार I स्पष्टीकरण - उपर्युक्त पंक्ति में निर्जीव पदार्थ (फूल व कलियाँ) का उल्लेख सजीव प्राणियों की तरह किया I

8. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।
जिसके अरुण-कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनि उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।
उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की।

(i) **(क)** क्षणिक
व्याख्या: क्षणिक
(ii) **(ख)** क्योंकि उसकी प्रेयसी की मृत्यु हो गई थी
व्याख्या: क्योंकि उसकी प्रेयसी की मृत्यु हो गई थी
(iii) **(ख)** प्रेयसी के
व्याख्या: प्रेयसी के
(iv) **(ख)** क्योंकि वह उसके जीवन जीने का एकमात्र सहारा है
व्याख्या: क्योंकि वह उसके जीवन जीने का एकमात्र सहारा है
(v) **(क)** कवि के लिए
व्याख्या: कवि के लिए

9. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए-

(i) **(ख)** सामान्यतः अपराधी होते हुए भी बालक को अवध्य माना जाता है।
व्याख्या: सामान्यतः अपराधी होते हुए भी बालक को अवध्य माना जाता है।
(ii) **(क)** व्याधि
व्याख्या: गोपियों के अनुसार योग व्याधि के समान है जिसके विषय में उन्होंने देखा -सुना नहीं है।

10. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित दो बहुविकल्पी प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए-

(i) **(घ)** संस्कृति की
व्याख्या: कशी प्रकांड ज्ञाता, धर्मगुरू और कलाप्रेमियों का निवास-स्थान है। यहाँ भारतीय शास्त्रों का ज्ञान है इसलिए इसे संस्कृति की पाठशाला कहा जाता है।
(ii) **(क)** लंगोटी एवं कबीरपंथी टोपी
व्याख्या: पाठ के अनुसार बालगोबिन भगत लंगोटी एवं कबीरपंथी टोपी पहनते थे। और सरदी आने पर ऊपर से एक काला कंबल ओढ़ लेते थे।

खंड - ख (वर्णनात्मक प्रश्न)

11. पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए-

(i) यह पद हमें यह बोध देता है कि प्रभु का साक्षात्कार करने के लिए उसे पूर्णतया मन में बसाना पड़ता है। जिस प्रकार हारिल अपने पंजे से लकड़ी को नहीं छोड़ता, उसी प्रकार भक्त को भी ईश्वर का दृढ़तापूर्वक ध्यान करना चाहिए। जब भक्त दिन-रात, सोते-जागते प्रभु का नाम लेता है, तभी ईश्वर उपलब्ध होते हैं। जिनके मन में अभी भटकन शेष है या जो योग-साधना के चक्कर में फँस जाते हैं, उन्हें ईश्वर के दर्शन नहीं हो पाते।
(ii) संगतकार निम्नलिखित रूप में मुख्या गायक - गायिकाओं की मदद करता है :-
  i. वह विखरते स्वर को सहारा देकर एहसास दिलाता है की वह अकेला नहीं है।
  ii. जब मुख्या गायक जटिल तानों में खो जाता है तब संगतकार स्थायी को संभाले रहता है।
  iii. वह उसके सुर में सुर मिलाकर उसके आतम विश्वास को बचाता है।
  iv. अपने स्वर को उंचा न उठा मुख्या गायक को सफल बनाता है।
  v. कभी वादक के रूप में कभी स्वर लहरियों का संभालने में तो कभी मुख्य गायक के थके स्वर को विश्राम देने के लिए संगतकार मदद करता है।
(iii) सीता स्वयंवर के समय शिवजी के धनुष को राम ने तोड़ दिया। मुनि परशुराम शिवजी के भक्त थे। जब उन्हें शिवजी के धनुष के टूटने का समाचार मिला तो उन्हें लगा कि शिव धनुष को तोड़ने वाले ने उनके आराध्य देव शिव का अपमान किया है और यही परशुराम के क्रोध का मुख्य कारण भी था ।
(iv) शिशु के धूलि-धूसरित शरीर को देखकर कवि नागार्जुन को ऐसा प्रतीत होता है कि मानों शिशु के रूप में कमल का पुष्प तालाब छोड़कर उनकी झोपड़ी में खिला है। बालक का सानिध्य पाकर उनके जीवन में सुख का आगमन हुआ है।

12. गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए-

(i) उस्ताद बिस्मिल्ला खां का नाम बचपन में अमीरुद्दीन था | इनके पिता पैगंबरबख्श और माता का नाम मिट्ठन था | इनका जन्म बिहार में सोन नदी के किनारे डुमरांव नामक स्थान पर हुआ था | 6 वर्ष की अवस्था में ये अपने ननिहाल काशी आ गए थे | उनके मामा सादिक हुसैन तथा अलीबख्श देश के जाने-माने शहनाई वादक थे। 14 वर्ष की अवस्था में ही बिस्मिल्ला खाँ बालाजी मन्दिर के नौबतखाने में रियाज़ के लिए जाते थे। उनमें संगीत के प्रति आसक्ति उन्हें

रसूलनबाई और बतूलनबाई के गाने सुनकर हुई थी। वे जब रियाज़ के लिए बालाजी मंदिर जाते तो रसूलनबाई और बतूलनबाई के रास्ते से होकर जाते। उनके ठुमरी, ठप्पे, दादरा और गीत सुनकर अमीरुद्दीन को बेहद खुशी मिलती थी।

(ii) लेखक के अनुसार सभ्यता, संस्कृति का परिणाम है। सभ्यता का विकास संस्कृत से ही होता है। सभ्यता, संस्कृति का ही परिणाम है। हमारे खाने-पीने के तरीके, ओढ़ने-पहनने के तरीके, हमारे गमन-आगमन के साधन, हमारे परस्पर कट-मरने के तरीके आदि सब हमारी सभ्यता ही है। संस्कृति एक आंतरिक संस्कार है और सभ्यता एक बाहरी संस्कार है। लेखक के अनुसार संस्कृति से ही सभ्यता का जन्म हुआ है। अतः जीवन जीने का तरीका ही सभ्यता है।

(iii) मन्नू भंडारी की आन्दोलनात्मक गतिविधियों को देखकर कॉलेज वालों ने उन्हें और उनके साथियों को कॉलेज से निकाल दिया। इसके साथ ही कॉलेज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में थर्ड इयर की कक्षाएँ भी बंद कर दी गईं और लेखिका तथा उनकी सहयोगियों का प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया| कॉलेज से बाहर रहते हुए भी लेखिका और छात्राओं ने इतना हुड़दंग मचाया कि कॉलेज वालों को हार मानकर अगस्त में थर्ड ईयर की कक्षाएँ फिर चालू करनी पड़ी। मन्नू भंडारी की यही खुशी 15 अगस्त 1947 की खुशी में समाकर रह गई।

(iv) मानव-संस्कृति में जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी हैं, वही स्थायी हैं क्योंकि संस्कृति का मूल लक्ष्य ही मानव-कल्याण है। ये कल्याणकारी वस्तुएँ ही स्थायी हैं। इसके विपरीत जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी नहीं हैं, वे मनुष्य के लिए विनाश का कारण बन जाती हैं। ऐसी अनुपयोगी वस्तुएँ अस्थायी होती हैं।

13. पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 -शब्दों में लिखिए-

(i) रचनाकार के लिए अनुभूति के अतिरिक्त बाहरी दबाव भी लिखने का कारण बनते हैं। 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में लेखक के मन में भीतरी विवशता से प्रेरित होकर ऐसी अनुभूति जागृत होती है कि वह अभिव्यक्ति के लिए व्याकुल हो उठता है। इस आंतरिक विवशता या प्रेरणा के अतिरिक्त बाहरी दबाव भी लिखने का कारण बनता है। हिरोशिमा पर लिखी लेखक की कविता उसके आंतरिक एवं बाह्य दवाव का परिणाम है। लेखक ने हिरोशिमा में हुए भीषण नर-संहार की पीड़ा को वहाँ जाने से पहले अनुभव किया था। लेकिन जापान यात्रा के दौरान उन्होंने उस विनाशलीला के दुष्प्रभावों का साक्षात्कार भी किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने हिरोशिमा पर कविता लिखी। यह अभिव्यक्ति उनकी यात्रा के बाद बाह्य दबावों एवं आंतरिक अनुभूति दोनों के कारण से हुई। अतः आंतरिक अनुभूति के साथ बाह्य दवावों में भी लेखक को लिखने के लिए बाध्य किया।

(ii) सैलानी जब प्राकृतिक स्थानों के सौन्दर्य का आनंद लेते हैं तब वहाँ अपने साथ खाने का सामान, पानी की बोतल अन्य पैकेट्स साथ लेकर जाते हैं और खाली करने के बाद इधर - उधर फेंक देते हैं। हम अनजाने में ही पर्यावरण को प्रदूषित कर देते हैं। वहाँ तमाम खाली डिब्बे, कूड़ा-कचरा, प्लास्टिक बैग फेंककर वातावरण को प्रदषित कर देते हैं। हमें वहाँ जाकर ऐसा नहीं करना चाहिए और साथियों को भी ऐसा करने से रोकना चाहिए। इन सभी कचरे को एक जगह डस्टबिन में एकत्रित कर देना चाहिए जन जागरूकता फैलाकर हम इन स्थानों को प्रदूषण से बचा सकते हैं। यही नहीं अपितु स्थानीय पक्षियों, जानवरों पर प्रहार करना भी ठीक नहीं है। वहाँ की वनस्पतियों की सुरक्षा करना प्रत्येक सैलानी का दायित्व है उन्हें नष्ट नहीं करना चाहिए।

(iii) भोलानाथ के बाबू जी रोज़ प्रातःकाल उठकर अपने दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर नहाकर पूजा करने बैठ जाते। वे रामायण का पाठ करते। पूजा-पाठ करने के बाद वे राम-नाम लिखने लगते । अपनी 'रामनामा बही' पर हज़ार राम-नाम लिखकर वे उसे पाठ करने की पोथी के साथ

बाँधकर रख देते । इसके बाद पाँच सौ बार कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर राम-नाम लिखकर उन्हें आटे की गोलियों में लपेटते और उन गोलियों को लेकर गंगा जी की ओर चल पड़ते| वहां एक-एक आटे की गोलियों को मछलियों को खिलाने लगते। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें सभी जीवों पर दया दिखानी चाहिए। मछलियों को आटे की गोलियां खिलाना, चींटी, गाय, कुत्ते, आदि सभी को भोजन देना चाहिए तथा सभी जीवों के प्रति प्रेम की भावना रखनी चाहिए।

14. संसार में शिक्षक-शिक्षार्थी का संबंध बहुत ही पवित्र माना गया है। शिक्षार्थी ज्ञान के लिए शिक्षक के पास जाता है और शिक्षक उसे ज्ञानी बनाता है। शिक्षक-शिक्षार्थी का संबंध आयु पर नहीं, अपितु ज्ञानवृद्धि पर आधारित होता है। भारत वर्ष में इन संबंधों की प्राचीन और सुदृढ़ परंपरा है। परन्तु आज के युग में शिक्षकों और विद्यार्थियों के आपसी सम्बन्ध बहुत हद तक बदल गए हैं। आज ज्ञान के प्रसार के साधन बहुत बढ़ गए हैं। इससे शिक्षार्थियों का औसत बौद्धिक स्तर भी बढ़ गया है, लेकिन आजकल अधिकतर मेधावी शिक्षार्थी शिक्षक बनना पसंद नहीं करते हैं। आज के भौतिकतावादी समाज में ज्ञान से अधिक धन को महत्व दिया जाने लगा है। अतः आज शिक्षण भी निस्वार्थ नहीं रह कर, एक व्यवसाय बन गया है। शिक्षक और शिक्षार्थी का संबंध भी एक उपभोक्ता और सेवा प्रदाता के समान होता जा रहा है। इससे शिक्षक के प्रति अगाध श्रद्धा और शिक्षक का शिक्षार्थी के प्रति स्नेह और संरक्षक भाव लुप्त होता जा रहा है। शिक्षक और शिक्षार्थी के दोनों रूपों में हमारा कर्तव्य बनता है कि हम ज्ञान के महत्व को समझें और अपने दायित्व का निर्वाह करें।

अथवा

वर्तमान समय में निम्न-मध्यम वर्ग महँगाई की समस्या से त्रस्त है। महँगाई भी ऐसी, जो रुकने का नाम ही नहीं लेती, बढ़ती ही चली जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार का महँगाई पर कोई नियन्त्रण रह ही नहीं गया है। महँगाई बढ़ने के कई कारण हैं। उत्पादन में कमी तथा माँग में वृद्धि होना महँगाई का प्रमुख कारण है। कभी-कभी सूखा, बाढ़ तथा अतिवृष्टि जैसे प्राकृतिक प्रकोप भी उत्पादन को प्रभावित करते हैं। वस्तुओं की जमाखोरी भी महँगाई बढ़ने का प्रमुख कारण है। जमाखोरी से शुरू होती है कालाबाजारी, दोषपूर्ण वितरण प्रणाली तथा अन्धाधुन्ध मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति। सरकारी अंकुश का अप्रभावी होना महँगाई तथा जमाखोरी को बढ़ावा देता है। सरकार अखबारों में तो महँगाई कम करने की बात करती है। पर वह भी महँगाई बढ़ाने में किसी से कम नहीं है। सरकारी उपक्रम भी अपने उत्पादों के दाम बढ़ाते रहते हैं। इस जानलेवा महँगाई ने आम नागरिकों की कमर तोड़कर रख दी है। अब उसे दो जून की रोटी जुटाना तक कठिन हो गया है। पौष्टिक आहार का मिलना तो और भी कठिन हो गया है। महँगाई बढ़ने का एक कारण यह भी है कि हमारी आवश्यकताएँ तेजी से बढ़ती चली जा रही हैं, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हम किसी भी दाम पर वस्तु खरीद लेते हैं। इससे जमाखोरी और महँगाई को बढ़ावा मिलता है। महँगाई को सामान्य व्यक्ति की आय के सन्दर्भ में देखा जाना चाहिए। महँगाई के लिए अन्धाधुन्ध बढ़ती जनसंख्या भी उत्तरदायी है। इस पर भी नियन्त्रण करना होगा। महँगाई ने आम आदमी की कमर तोड़ दी है। 80 से 100 रुपए किलो की दाल आम आदमी खरीदकर भला कैसे खा सकता है। सरकार को खाद्य महँगाई पर प्रभावी अंकुश लगाना परमावश्यक है जिससे आम आदमी को राहत मिल सके।

अथवा

दिल्ली की यातायात व्यवस्था में क्रांति लाने का श्रेय मेट्रो रेल सेवा को है। 24 दिसम्बर, 2002 को दिल्लीवासियों के सुखद स्वप्न का साकार होना प्रारम्भ हुआ। इसी दिन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने दिल्ली की पहली मेट्रो ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर इस बहुप्रतीक्षित परियोजना का शुभारम्भ किया। इस मेट्रो रेल का विस्तार बरवाला तक हो गया है अर्थात् शाहदरा

से चलकर तीसहजारी, शास्त्री नगर, इन्द्रलोक, रोहिणी, रिठाला होती हुई यह ट्रेन बरवाला तक सेवा प्रदान कर रही है। 19 दिसम्बर, 2004 को दिल्ली मेट्रो ने एक नया इतिहास रचा। इस दिन कश्मीरी गेट से दिल्ली विश्वविद्यालय तक विश्व की सबसे सुरक्षित और प्रौद्योगिक रूप से उन्नत भूमिगत मेट्रो ट्रेनों का शुभारम्भ हुआ। 4 किमी. की यह दूरी 6 मिनट में तय हो जाती है।
मेट्रो ट्रेन का तीसरा खंड कस्तूरबा गाँधी मार्ग (कनॉट प्लेस) से द्वारका तक है। इसके द्वारा, उत्तम नगर, जनकपुरी, तिलक नगर, राजौरी गार्डन, कीर्ति नगर, पटेल नगर, करोलबाग आदि क्षेत्र कनॉट प्लेस से जुड़े हैं। कश्मीरी गेट से चावड़ी बाजार होते हुए नई दिल्ली को भूमिगत ट्रेन के द्वारा जोड़ा गया है। दिल्ली के उपराज्यपाल के अनुसार दिल्ली मेट्रो ने 2021 तक 245 किमी. लम्बे मेट्रो रेल लाइनें बिछाने का मास्टर प्लान तैयार किया है। इस योजना के पूरा होने के बाद दिल्ली ऐसा शहर हो गया है जहाँ न सिर्फ खंभों पर बल्कि जमीन के नीचे सुरंगों में मेट्रो रेल चलती है।
21वीं सदी में भारत को विश्व स्तर का पब्लिक सिस्टम उपलब्ध हो रहा है। इससे पर्यावरण और लोगों की जरूरतें पूरी होने के साथ-साथ दूसरे देशों से आयात होने वाले ईंधन पर भी देश की निर्भरता कम होती चली जाएगी।

15. प्रति,
व्यवस्थापक
बंसल प्रकाशन प्रा० लि०
दिल्ली।
विषय-डी. टी. पी. आपरेटर हेतु आवेदन-पत्र।
महोदय,
दिनांक 05 मई, 20xx को प्रकाशित 'टाइम्स ऑफ इंडिया' अंग्रेजी दैनिक समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि आपके प्रकाशन को डी. टी. पी. आपरेटर की आवश्यकता है। मुझे डी .टी .पी . आपरेटर के कार्य का अनुभव और जानकारी है। इस संबंध में मैं अपनी योग्यतओं का उल्लेख करते हुए आवेदन-पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा संक्षिप्त व्यक्तिगत विवरण निम्नलिखित है-
नाम - रोहित राय
पिता का नाम - श्री राम प्रकाश राय
जन्मतिथि - 10 सितबर, 1990
पता - बी 323, इंद्रप्रस्थ कालोनी, आनंद विहार, दिल्ली।
शैक्षणिक योग्यताएँ-

दसवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2005	55%
बारहवीं कक्षा	सी०बी०एस०ई० दिल्ली	2007	59%
बी. ए.	पत्राचार संस्थान, दिल्ली	2010	55%

व्यावसायिक योग्यताएँ-
1. पुस्तक प्रकाशन में द्विवर्षीय डिप्लोमा वाई.एम.सी.ए. से 2012
2. कम्प्यूटर प्रशिक्षण एकवर्षीय डिप्लोमा एन.आई.आई.टी से 2013

अनुभव- ओजस्वी प्रकाशन में कम्प्यूटर आपरेटर मार्च 2013 से अब तक।
मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सेवा का अवसर मिलने पर पूरी निष्ठा से कार्य करूँगा और अपनी सेवाओं से मैं आपको संतुष्ट रखने का पूर्ण प्रयास करूँगा।
सधन्यवाद
रोहित राय
हस्ताक्षर ....

दिनांक 08 मई, 2019
संग्लन- समस्त शैक्षणिक, व्यावसायिक योग्यताओं एवं अनुभव प्रमाण-पत्रों की छायांकित प्रति।

अथवा

From: pawan@mycbseguide.com
To: xyzschool@gmail.com
CC ...
BCC ...
विषय - अधिक खेल सामग्री उपलब्ध कराने का अनुरोध
महोदय,
जैसा कि आपको विदित है कि आगामी मास में जिले स्तर पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन होने वाला है जिसमें हमारा विद्यालय भी भाग ले रहा है। हालांकि उपलब्ध साधनों से हमने अभ्यास किया है किन्तु वह पर्याप्त नहीं है। यह अनुरोध हम आपसे कर रहे हैं कि कृपया खिलाड़ियों की खेल सुविधाओं एवं सामग्री में कोई कमी न की जाए तथा खेल गतिविधियों हेतु अधिक फंड निधि की व्यवस्था की जाए ताकि आने वाली प्रतियोगिता में हम बेहतर प्रदर्शन कर सकें और विद्यालय का नाम रौशन कर सकें।
आशा है आप हम खिलाड़ियों के इस अनुरोध को स्वीकार करने की कृपा करेंगे।
पवन

16. परीक्षा भवन,
दिल्ली।
दिनांक 13 मार्च, 20XX
सेवा में,
परिवहन सचिव महोदय,
दिल्ली सरकार, दिल्ली।
विषय अपनी कॉलोनी तक नए बस मार्ग हेतु।
मान्यवर,
मैं उत्तर-पश्चिम दिल्ली के विकासपुरी, डी ब्लॉक का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में बड़ी जनसंख्या निवास करती है, जिसमें अधिकांश लोग दिल्ली के विभिन्न भागों में कार्यरत हैं। हमारी कॉलोनी से कोई बस नहीं चलती। इसके कारण लोगों को प्रत्येक दिन अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। आने-जाने के निजी वाहन टैम्पो ही एकमात्र साधन हैं। ये टैम्पो चालक अक्सर आवश्कता से अधिक सवारी भर लेते हैं जिस कारण कोई दुर्घटना होने की आशंका हमेशा बनी रहती है। अन्य कोई साधन न होने कारण हमें मजबूरी में इन टैम्पो से यात्रा करनी पड़ती है।
अतः आपसे अनुरोध है कि विकासपुरी डी-ब्लॉक तक एक नया बस मार्ग (बस रूट) आरंभ करने की कृपा करें। इसके लिए हम सब आपके आभारी रहेंगे। मुझे विश्वास है कि आप इसे गंभीरता से लेते हुए संबंधित अधिकारी को इसके लिए उचित निर्देश देंगे।
धन्यवाद।
भवदीय
कमल

अथवा

P-276, पालम
नई दिल्ली
दिनांक:
प्रिय गिरीश
सप्रेम नमस्ते!

कल ही पिताजी से बात हुई। पिताजी ने बताया कि आपको पटना स्कूल में दाखिला मिल गया है। चूँकि आप एक महीना स्कूल में बिता चुके हैं, मेरा मानना है कि आपने दोस्त बनाना शुरू कर दिया होगा। सुनिश्चित करें कि आपको अच्छी संगति के साथ एक अच्छा दोस्त मिले। प्रिय भाई ध्यान रखना तुम्हारे ये कुमित्र तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ेंगे। बुरी संगति मनुष्य को ले डुबती है। कुसंगति में पड़कर भविष्य नष्ट हो जाता है और यदि मित्र अच्छा हो तो जीवन संवर जाता है। विद्वानों ने सही कहा है, "जीवन में अच्छी संगति का बहुत महत्व होता है। एक मित्र अच्छा हो तो सही मार्गदर्शन कर हमें सफलता के शिखर पर ले जाता है। हमें चाहिए अच्छे लोगों से मित्रता करें। हमारे माता-पिता ने तुम्हें पढ़ने के लिए बिहार के सबसे अच्छे विद्यालय में भेजा है ताकि तुम्हारा भविष्य संवर सके।अच्छे दोस्त चुनते समय सावधान रहो।

तुम्हारा शुभ चिंतक

गोविन्द

17.

कर पर्यावरण की रक्षा मनाएँगे पृथ्वी दिवस।
तभी तो होगा सुरक्षित और बेहतर भविष्य ।

अथवा

संदेश

14 सिम्बर 2020

8:00 बजे

मेरे प्रिय छात्रों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है और हमें राष्ट्रभाषा का प्रयोग करने पर गर्व का अनुभव होना चाहिए। अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रधानाचार्य

जी. के. सिंह